Rigved Yajurved

ओ३म्
AUM

Samved Atharvaved

वेदाङ्ग

(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji - Prachar Committee
P.O. Box 4245, Samabula .
Phone / Fax 386044

जनवरी - मार्च प्रकाशन २०००
अंक २४

संस्कार

विवाह संस्कार

पिछले अंक से आगे

इन छह मन्त्रों को बोलकर वर वधू को उठाता है। तत्पश्चात् दोनों प्रज्वलित अग्नि की प्रदक्षिणा कर अपने स्थान पर खड़े हो जाते है और वर निम्न मन्त्र का उच्चारण करता है -

ओम् अमो ऽहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमो ऽहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेव विवहावहै सह रेतो दधावहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून्। ते सन्तु जरदष्टयः सं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्॥ पा. १।६।३

हे प्रिय ! मैं संगीतमय सामवेद हूँ और तुम कवितामयी ऋचा = ऋग्वेद हो। मैं वर्षा करने वाले सूर्य के समान हूँ और तू गर्भादि को धारण करनेवाली पृथिवी के समान है। आओ, हम प्रसन्ता पूर्वक विवाह करें और साथ मिलकर वीर्य धारण करें। उत्तम प्रजा को उत्पन्न करें। वे सन्तान लम्बी आयु वाली हों। हम दोनों भी एक-दूसरे से प्रेम करने वाले, उत्तम स्वास्थ्य से दमकते हुए, सदा प्रसन्नचित होकर सौ वर्ष तक एक-दूसरे को प्रेमपूर्वक देखते रहें, सौ वर्ष तक आनन्द से जीते रहें और सौ वर्ष तक, एक-दूसरे के प्रिय वचनों को सुनते रहें।

(१२) शिला-आरोहण

ओम् आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतो ऽवबाधस्व पृतनायतः॥ पार.१।७।१

हे देवी! तू धर्म कार्यों मे इस पत्थर की तरह दृढ़ बन। गृहस्थ जीवन में कभी आपत्तियां और संकट आ जाएं तो उनमें इस प्रकार दृढ़ रहना है जैसे चट्टान मूसलाधार वर्षा और तूफान के थपेड़े खाकर भी दृढ़ रहती है।
तू अपने ऊपर आक्रमण करने वालों का दृढ़ता से मुकाबला करना। इसके लिए तू अपने शरीर को वज्र की तरह कठोर बनाना।

(१३) लाजा होम

लाजा होम विवाह की अति प्रमुख विधि है। इस विधि में कन्या का भाई अपनी बहन की अंजली को लाजा से भरता है और वह मन्त्र उच्चारण पूर्वक उन्हें कुण्ड में डालती है। इस क्रिया में पति उसकी सहायता करता है - तात्पर्य यह कि दोनों मिलकर यज्ञकर्म किया करें। वधू जिन मन्त्रों का पाठ करती है उनकी भावनाएँ निम्न है -

१. हे न्यायकारी प्रभु ! आप मुझे पितृकुल से छुड़ा रहे है परन्तु मैं पतिकुल में सदा स्थिर रहूँ, वहां से कभी अलग न होऊं।
२. इन लाजाओं का होम करते हुए मेरी यही कामना है कि मेरा पति दीर्घजीवी हो और मेरे कुटुम्ब के लोग धन-धान्य आदि से समृद्ध हों।
३. हे पति ! मैं आपकी समृद्धि के लिए इन खीलों से होम कर रही हूँ। प्रभु की कृपा से मेरा और आपका परस्पर दृढ़ प्रेम हो।

लाजा होम के पश्चात् पति-पत्नी की हस्ताञ्जलि पकड़ते हुए जिस मन्त्र का उच्चारण करता है उसमें नारी की महत्ता का वर्णन है - *तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः* -
हे देवी ! आज से मैं तेरे प्रति स्त्रियों के उत्कर्ष की गाथा का ही गान किया करूंगा।

यह तो हुई विधि, अब थोड़ा इसके रहस्य पर दृष्टिपात कीजिए। खीलों से बहन की अञ्जली को भरता हुआ भाई यह आश्वासन दे रहा है कि - बहन ! आज तू पिता के घर से विदा हो रही है। आज पिता की जिम्मेवारी समाप्त हो रही है और मेरा जिम्मेवारी शुरु हो रही है। तू जब-जब यहां आएगी तब-तब मैं अपनी पवित्र कमाई से तेरी अञ्जली को भरकर तुझे यहां से विदा करूंगा।

खीलों की आहुतियां दिलवाकर वर-वधू को विवाह की वास्तविकता बड़े मार्मिक रूप में समझाई गई है। लाजा धान से बनता है। उसमें भूसी और

चावल का मेल होता है। इसमें भूसी, वधू की प्रतिनिधि है और चावल वर की। जब तक दोनों मिले रहेंगे तब तक दोनों की रक्षा है। जब तक भूसी चावल से संयुक्त रहती है तब तक वह चावल की भाव बिकती है और चावल से अलग होकर उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता। इसी प्रकार स्त्री जब तक पति के साथ रहती है तभी तक उसकी शोभा है। उधर चावल भूसी से अलग होकर महंगा बिकता है परन्तु अपनी उत्पादक शक्ति को खो देता है। इन चावलों को बोकर कोई भी किसान अपनी मनो कामनाओं को पूरी नहीं कर सकता। अंकुर उत्पन्न करने के लिए कितना ही महंगा चावल क्यों न हो उसे भूसी का सहारा लेना ही पड़ता है। इसी प्रकार सन्तान चाहने वाला पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए।

धान को पहले एक स्थान पर बोकर उसकी पौधा तैयार की जाती है फिर उस पौधा को उखाड़कर दूसरे स्थान पर आरोपित किया जाता है तभी वह फलता फूलता है। इसी प्रकार कन्या भी पितृकुल में लालित एवं पालित होती है और पति-गृह में जाकर सन्तान से फलती-फूलती है।

(१४)सप्तपदी

यह विवाह की अन्तिम प्रमुख विधि है। इस समय वर का उपवस्त्र के साथ वधू के उत्तरीय वस्त्र की गाँठ बाँध दी जाती है।
इस ग्रन्थि बन्धन का एक प्रयोजन तो यह है कि अकेले पुरुष अथवा अकेली स्त्री के लिए इन सात पगों को रख सकना सम्भव नहीं है। दोनों एक दूसरे के सहयोगी बनकर ही इस गृहस्थ एवं संसार रूपी भीषण नदी में स्थिरता पूर्वक पैर रख सकेंगे।

ग्रन्थि बन्धन का दूसरा प्रयोजन क्या है ?

यज्ञमण्डप के नीचे बैठकर बांधी गई दो वस्त्रों की गाँठ केवल दो वस्त्रों की गाँठ नहीं है, यह तो दो हृदयों का ग्रन्थि बन्धन है। वैदिक धर्म में तलाक नहीं है। आज वर-वधू एक हुए, इन दोनों का सम्बन्ध एक हुआ - यही दर्शाने के लिए यह ग्रन्थि बन्धन किया जाता है।

इन पगों को रखते हुए वर-वधू को यह भी स्मरण कराता है - **मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम** - हे वधू ! तू उलटे पैर से सीधे पैर का उल्लंघन मत करना। गृहस्थ कार्यों को करते हुए कभी ऐसा मत करना कि सरलता का स्थान कुटिलता ले ले, सत्य असत्य से और न्याय अन्याय से दब जाए। तू किसी भी स्थिति में सीधे की बजाय उलटे मार्ग को स्वीकार मत करना। सदा असत्य के स्थान पर सत्य को ही महत्व देना। इन शब्दों के साथ वह वधू को दाहिना (सीधा) पैर उठाकर चलने का आदेश देता है। सीधा पैर उठाकर चलने का तात्पर्य भी यही है कि तुझे सीधे=सरल मार्ग से चलना है, उलटे मार्ग से नहीं।

शेष अगले अंक में